पानी का हौसला

ए बहते हुए पानी
तू मेरे साथ भी रहते जा,
तू पहाड़ों से गिर कर,
समतल में बहते जा,
पर मेरे दिल से हो कर,
तू कुछ कहानियां भी कहते जा।

एक पत्थर से उतर कर,
दूसरे पे गिरना,
और दूसरे से उतर कर तीसरे पे बहना,
ऐसी क्या बेचैनी है तुझे समतल में रहने की,
की तू छोड़ता नहीं जिद कभी,
हर जंगल से बहने की।

किससे मिलना है तुझ,
ऐसा क्या करना है,
की हर पल बिता देता है तू,
उस एक सपने की चाह में
तेरी दहाड़ती हुई चाल से
सहम सा जाता हूं मै,
इतना हौसला?
थोड़ा जम सा जाता हूं मै।

क्यों मै नहीं होता बेचैन इतना,
अपने मंजिल की चाह में,
ये मदहोशी क्यों नहीं होती,
मेरे मंजिल की राह में,

ऐसा क्या है तेरे मंजिल में तेरे राहों में,
क्यों दहाड़ता है तू, हर बढ़ते हुए पाओं में

बस ये बताते जा तू मुझे,
तेरे रास्ते में आया हूं मै,
तेरे हौसलों के हर किस्सों के वास्ते आया हूं मै।

अभिषेक गुप्ता (छात्र)
पंचम वर्ष, वास्तुकला